Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ
فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ
هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ

(सूरः अराफ़ : 157)

अनुवाद : और मेरी रहमत वह है कि हर चीज़ पर हावी है। अतः मैं इस (रहमत) को उन लोगों के लिए अनिवार्य कर दूँगा जो तक़्वा इख़्तेयार करते हैं और ज़कात देते हैं और वे जो हमारी आयात पर ईमान लाते हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-24

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

25 जुल्कादा 1444 हिज्री कमरी, 15 अहसान 1402 हिज्री शम्सी, 15 जून 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तीन व्यक्ति जिन से अल्लाह क़ियामत को न बात करेगा और न उन की तरफ़ देखेगा

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन से अल्लाह ताला क़ियामत को न बात करेगा और न उनकी तरफ़ (शफ़क़त की) नज़र करेगा। एक वह शख़्स जिसने अपना तिजारती सामान बेचने के लिए क़सम खाई कि मुझे उसके लिए इस से बहुत ज़्यादा दिया जाता था जवाब दिया जाता है, जबकि वह झूठा है और एक वह शख़्स जिसने अस्र के बाद झूठी क़सम इस लिए खाई कि वह किसी मुस्लमान शख़्स का माल मार्ले और एक वह शख़्स जिसने अपना बचा हुआ पानी रोक लिया। अल्लाह तआला फ़रमाएगा : आज मैं भी अपना फ़ज़ल तुझ से रोकता हूँ जैसा कि तू ने वह बची हुई चीज़ रोक ली थी, जो तेरे हाथों ने नहीं बनाई थी।

(सही बुख़ारी, भाग 4 किताब मसाका, प्रकाशन 2008 कादियान)

★ ★ ★

हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत बनी-इसराईल : 33 وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَسَآءَ سَبِيْلًا की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में व्यभिचार से बचने का हुक्म क़तल औलाद के वर्णन के बाद दिया है। इस में यह लतीफ़ इशारा है कि व्यभिचार से भी औलाद का क़तल होता है क्योंकि अव्वल तो हराम की औलाद को आम तौर पर ज़ाए करने की कोशिश की जाती है। दूसरे अगर ज़ाए न भी हो तब भी इस की तर्बीयत और परवरिश में मर्द खुल कर हिस्सा नहीं ले सकता और वह औलाद बिलउमूम बग़ैर वाली वारिस के रह कर तबाह हो जाती है :

لَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى के शब्द प्रयोग कर के इस तरफ़ इशारा किया है कि व्यभिचार का अवसर पैदा ही न होने दो अर्थात नामुहर्रम औरतों से अलग न मिलो। उनसे ज़्यादा घुला मिल कर न रहो इत्यादि इत्यादि। क़ुरआन--ए-करीम की यह बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है कि वह न सिर्फ गुनाह से रोकता है बल्कि गुनाह से रुकने के ज़राए भी बताता है और ऐसी ही तालीम बनीनौ इन्सान की हिफ़ाज़त कर सकती है। जो किताब गुनाह से बचने के ज़राए नहीं बताती वह इन्सान को एक परेशानी में मुबतला कर देती है। इतमेनान वही किताब पैदा कर सकती है जो किसी बात से मना करने के साथ ही इस से बचने के ज़राए भी बता देता इन्सान को तसल्ली हो कि मैं इस हुक्म पर अमल कर सकूँगा। इंजील कहती है कि तू किसी औरत को बदनज़री से न देख लेकिन क़ुरआन कहता है कि तू किसी नामुहर्रम औरत की तरफ़ नज़र उठा कर ही न देख क्योंकि वह कशिश जो इन्सान के दिल में लग़्ज़िश पैदा करती है जब उस के लिए रास्ता खोल दिया जाए तो हिफ़ाज़त नामुमकिन नहीं तो

शेष पृष्ठ 12 पर

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबुव्वत की व्यापक विशेषताएं रखते थे

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा को देखकर चाहते थे कि पूरी प्रगतियों पर पहुँचे, आख़िर सहाबा ने वह पाया जो दुनिया ने कभी नहीं पाया था और वह देखा जो किसी ने नहीं देखा था

अंबिया में हमदर्दी का जोश

नबी का आना ज़रूरी होता है। इसके साथ क़ुव्वत-ए-कुदसी होती है और उन के दिल में लोगों की हमदर्दी, नफ़ारसानी और आम ख़ैर ख़्वाही का बे-ताब करा देने वाला जोश होता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निसबत ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है : لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (अल् शोरा : 4) अर्थात क्या तू अपनी जान को हलाक कर देगा इस ख़्याल से कि वह मोमिन नहीं होते? इसके दो पहलू हैं एक काफ़िरों की निसबत कि वे मुस्लमान क्यों नहीं होते। दूसरा मुस्लमानों की निसबत कि इन में वे आला दर्जा की रूहानी क़ुव्वत क्यों नहीं पैदा होती जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पाते हैं। चूँकि तरक़्क़ी तदरीजन होती है इसलिए सहाबा की तरक़्क़ीयां भी तदरीजी तौर पर हुई थीं, परंतु अंबिया के दिल की बनावट बिल्कुल हमदर्दी ही होती है और फिर हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो जामा जमी कमालात-ए-नबुव्वत थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में यह हमदर्दी कमाल दर्जा पर थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा को देखकर चाहते थे कि पूरी प्रगति पर पहुंचे। लेकिन यह उरूज एक वक़्त पर मुक़द्दर था। आख़िर सहाबा ने वह पाया जो दुनिया ने कभी नहीं पाया था और वह देखा जो किसी ने नहीं देखा था।

समस्त निर्भरता मुजाहिदे पर है।

सारा मदार मुजाहिदा पर है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अन कबूत : 70) जो लोग हम में हो कर कोशिश करते हैं हम उन के लिए अपनी समस्त राहें खोल देते हैं। मुजाहिदा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हो सकता। जो लोग कहते हैं कि सय्यद अब्दुलक़ादिर जीलानी रहमतुल्ला अलैहि ने एक नज़र में चोर को कुतुब बनादिया ,धोखे में पड़े हुए हैं और ऐसी ही बातों ने लोगों को हलाक कर दिया है। लोग समझते हैं कि किसी की झाड़ फूंक से कोई बुज़ुर्ग बन जाता है।

जो लोग ख़ुदा के साथ जल्दी करते हैं वे हलाक हो जाते हैं। दुनिया में हर चीज़ की तरक़्क़ी तदरीजी है। रूहानी तरक़्क़ी भी इसी तरह होती है और मुजाहिदा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता और मुजाहिदा भी वह है जो ख़ुदा तआला में हो कर। यह नहीं कि क़ुरआन-ए-करीम के ख़िलाफ़ ख़ुद ही बेफ़ायदा रियाज़तें और मुजाहिदा जोगियों की तरह तजवीज़ कर बैठे। यही काम है जिस के लिए ख़ुदा ने मुझे मामूर किया है ताकि मैं दुनिया को दिखलादूं कि किस तरह पर इन्सान अल्लाह ताला तक पहुंच सकता है। यह कानून-ए-कुदरत है। न सब महरूम रहते हैं और न सब हिदायत पाते हैं।"

मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 460 प्रकाशन 2018 कादियान

★ ★ ★

क़ुरआन-ए-करीम की यह बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है कि वह न केवल गुनाह से रोकता है बल्कि गुनाह से रुकने के ज़राए बताता है।

जो किताब गुनाह से बचने के ज़राए नहीं बताती वह इन्सान को एक परेशानी में मुबतला कर देती है :

संतोष वही पुस्तक पैदा कर सकती है जो किसी बात से मना करने के साथ ही उस से बचने के ज़राए भी बता दे।

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

"हम तो अल्लाह तआला की तरफ़ से सब्र के वास्ते आधारित किए गए हैं।" (हज़रत मसीह माहूद अलैहिस्सलाम)

अंबिया की जमातों का काम सब्र और क़ानून की पाबंदी है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो जमाअत को बेशुमार जगह सब्र की तलक़ीन फ़रमाई है, दुआ की तलक़ीन फ़रमाई है

और स्पष्ट फ़रमाया है कि जिनके पांव नाज़ुक हैं और मेरे साथ इन ख़ारदार और पथरीले रास्तों पर चल नहीं सकते और सब्र की ताक़त नहीं रखते वे बेशक छोड़ दें

यह सब्र ही तो है जो दुनिया में जमात की इन्फ़रादियत क़ायम किए हुए है

हमने ज़माने के इमाम को माना है जिन्होंने अमन क़ायम रखने और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वारिस बनने के लिए हमें यह तालीम दी है कि तुमने सब्र से काम लेना है

सब्र अंबिया की जमाअतों के अहम तरीन और अव्वलीन फ़रायज़ में से है जिसके बग़ैर कोई जमात तरक़्क़ी नहीं कर सकती और न दुनिया को अपने पीछे चलने पर मजबूर कर सकती है

मुस्तक़िल मिज़ाजी से अपने अन्दुरून की सफ़ाई करना असल सब्र है और जो ऐसे लोग हों फिर अल्लाह तआला उनकी मदद के लिए ऐसी जगहों से आता है जिसका तसव्वुर भी नहीं जा सकता

यह हमेशा याद रखना चाहिए कि सब्र किसी कमज़ोरी की वजह से न हो, किसी दुनियावी ख़ौफ़ की वजह से न हो बल्कि सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा चाहते हुए हो तो फिर ही वह हक़ीक़ी सब्र है जो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को खींचता है

सुन्नते अंबिया और अंबिया की जमाअतों की सुन्नत यह है कि वे सब्र और दुआ से काम लेते हैं जैसा कहा अल्लाह तआला का भी हुक्म है। रसूल का भी हुक्म है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें तालीम भी यह दी थी

यह बात हमें हमेशा याद रखनी चाहिए कि हमने जमाअत के वसीअ-तर मुफ़ादात के लिए आरिज़ी और छोटी तकलीफों को सब्र से बर्दाश्त करना है

"मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि सब्र को हाथ से न जाने दो। सब्र का हथियार ऐसा है कि तोपों से वह काम नहीं निकलता जो सब्र से निकलते हैं। सब्र ही है जो दिलों को फ़तह कर लेता है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात मुबारका की रोशनी में मुश्किलात और तकालीफ़ पर सब्र करने की नसीहत

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 अप्रैल 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ
وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

कुछ लोग मुझे लिखते हैं और इस पर बड़ी पुरज़ोर अपनी दलीलें भी देने की कोशिश करते हैं कि जमाअत के हालात पर जैसा कि पाकिस्तान में या कुछ और जगह पर हैं हमें सिर्फ सब्र दिखाने की बजाय कुछ रद्देअमल दिखाना चाहिए। बहुत सब्र हो गया। और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की मिसालें देने की कोशिश करते हैं कि उनके ज़माने में इस तरह जमात ने रद्देअ-मल दिखाया और कुछ जगह जमाअत को रद्देअमल की आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इजाज़त दी। यह बिल्कुल ग़लत बातें हैं जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ मंसूब की जाती हैं। हाँ इन बातों को ग़लत समझा गया है। कुछ वाक़ियात शायद सामने आए हों, किसी ने पढ़े हों लेकिन ग़लत समझा है। हाँ आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ानून के दायरे में रहते हुए कुछ का-र्यवाहियां कीं लेकिन यह नहीं कि बिना सोचे समझे बुलवाइयों के जलसों की

तरह जलूस लेकर निकल आने की इजाज़त दे दी और फिर अगर यह कहें कि कोई एहतेजाज किसी सूरत में हुआ तो वह ख़लीफ़ा वक़्त की इजाज़त के अधीन था, न कि हर अफ़्सर अपने तौर पर अपने लोगों को इकट्ठा कर के एहतेजाज शुरू कर दे। बहरहाल तक़सीम-ए-मुल्क से पहले जब भारत पर

अंग्रेज़ों की हुकूमत थी और कुछ अंग्रेज़ अफ़सरों ने और दूसरे हमारे मुख़ालिफ़ अफ़िसरों ने बहुत दफ़ा कोशिश की कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की तक़रीरों को इश्तिआल अंगेज़ तक़रीरें कह कर या उनका रंग देकर फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर हाथ डाला जाए लेकिन हर दफ़ा इसलिए नाकाम होते थे कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मुख़ालेफ़ीन और हुकूमत के आफ़सरान को उनका चेहरा दिखा कर हमेशा जमाअत को यह आख़िर पर फ़रमाया करते थे कि अंबिया की जमातों का काम सब्र और क़ानून की पाबंदी है और इस का एतराफ़ ख़ुद उस वक़्त के मुख़ालिफ़ आफ़सरान ने किया कि तक़रीर के दौरान जब हम समझते थे कि आज हाथ डालने का मौक़ा

आएगा, बग़ावत और अमन बर्बाद करने की दफ़आत लगा कर हम पकड़ने की कोशिश करेंगे, लेकिन जब तक़रीर का इख़तेताम होता था तो बिल्कुल और रंग में जमात को नसीहत फ़रमाते और उन कामों से मना फ़रमाते थे जो क़ानून के दायरे से बाहर हैं और फिर इन मुख़ालिफ़ आफ़सरान के मन्सूबों पर पानी फिर जाता था और यह हो भी किस तरह सकता था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो कोई ऐसी बात करें जो इस्लाम की तालीम के ख़िलाफ़ है, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीम के बिल्कुल खिलाफ़ हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो जमाअत को बेशुमार जगह सब्र की तलक़ीन फ़रमाई है, दुआ की तलक़ीन फ़रमाई है और वाज़ह फ़रमाया है कि जिनके पांव नाज़ुक हैं और मेरे साथ इन ख़ारदार और पथरीले रास्तों पर चल नहीं सकते और सब्र की ताक़त नहीं रखते वे बेशक मुझे छोड़ दें।

(उद्धृत अनवारुल इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 23-24)

यह सब्र ही तो है जो दुनिया में जमात की इन्फ़रादियत क़ायम किए हुए है

कई सयास्तदान और मीडीया वाले मुझसे भी पूछते हैं। मैं उनको अक्सर दफ़ा यह जवाब देता हूँ कि जो लोग हमें तकलीफ़ पहुंचा रहे हैं और ज़ुलम कर रहे हैं उन लोगों में से ही हम अहमदी भी आए हैं और इस ज़ुलम के बावजूद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उन लोगों में से लोग आ भी रहे हैं। हमारे मिज़ाज भी वैसे ही थे जैसे उन लोगों के हैं। हम भी इन जैसा रद्द अमल दिखा सकते हैं लेकिन हमने ज़माने के इमाम को माना है जिन्हों ने अमन क़ायम रखने और अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वारिस बनने के लिए हमें यह तालीम दी है कि तुमने सब्र से काम लेना है

हाँ क़ानून के दायरे में रह कर अपने हुक़ूक़ को हासिल करने की जो कोशिश कर सकते हो वे करो। कई दफ़ा कुछ मुआमलात को बग़ैर किसी क़ानूनी कार्र-वाई के भी ख़ुदा तआला पर छोड़ने की तलक़ीन फ़रमाई है कि मामला अल्लाह तआला पर छोड़ो और फ़रमाया ख़ुदा तआला ख़ुद हमारी मदद को आएगा और वह आया। अतः वाज़िह होना चाहिए कि ये अंबिया की तारीख़ है और यही हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीम है कि हमने सब्र से काम लेना है। बहरहाल जवाब पर लोग हैरान भी होते हैं और सराहते भी हैं कि यह अमन से रहने वालों का हक़ीक़ी रद्देअमल है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से बात करने वालों के लिए मज़ीद खोल कर आप रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़ुतबा की रोशनी में भी बताना चाहता हूँ। इस ख़ुतबा में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सब्र के अर्थ बड़ी तफ़सील से वर्णन फ़रमाए, रोशनी डाली बल्कि उस के बाद एक सिलसिला ख़ुत्बात आला अख़लाक़ का भी शुरू किया और इस को भी सब्र के मज़मून के साथ जोड़ा। बहरहाल इस ख़ुतबात से लाभ हासिल करते हुए मैं बाअज़ बातें वर्णन करूँगा। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़्तलिफ़ अवसरों पर इर्शा-दात जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाए जो सब्र से मुताल्लिक़ बातों के मु-ताल्लिक़ हैं वे हवाले पेश करूँगा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने सब्र को एक इंतेहाई अहम चीज़ क़रार दिया और फ़रमाया कि यह अंबिया की जमातों के अहम तरीन और अव्वलीन फ़रायज़ में से है जिसके बग़ैर कोई जमात तरक़्क़ी नहीं कर सकती और न दुनिया को अपने पीछे चलने पर मजबूर कर सकती है और कोई जमात ऐसी नहीं गुज़री जिसने इस फ़र्ज़ की अदायगी के बग़ैर कामयाबी का मुँह देखा हो सब्र दो तरह का होता है

आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने तफ़सीर में भी यह वज़ाहत फ़रमाई। आप रज़ि-यल्लाहु अन्हो ने बाअज़ आयात की तफ़सीर में इस को वर्णन फ़रमाया है। एक सब्र यह है कि इन्सान को किसी रद्देअमल की ताक़त हो और फिर वे सब्र दिखाए और दूसरे उस वक़्त का सब्र है जब उस को मुक़ाबले की ताक़त ही न हो। वह सब्र है मजबूरी का सब्र।

ताक़त होते हुए तो सब्र यही है कि फ़ित्ना-ओ-फ़साद करने वालों का या ज़ुलम करने वालों का जवाब न देना।

जैसा मुख़ालेफ़ीन सुलूक कर रहे हैं इस तरह का रद्द-ए-अमल नहीं दिखाना और इंतेहाई सब्र का अल्लाह तआला की ख़ातिर मुज़ाहरा करना। और ताक़त न होते हुए भी सब्र है जो आसमानी आफ़ात पर अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहते हुए सब्र शुक्र करना है। बहरहाल उर्दू में तो सब्र सिर्फ यही है कि ख़ामोश हो जाओ, सब्र हो गया लेकिन अरबी में इस के बड़े वसीअ अर्थ हैं। जब हम अरबी में मअनी देखें तो सही समझ आती है कि सब्र के हक़ीक़ी अर्थ क्या हैं और किस तरह का सब्र एक मोमिन को दिखाना चाहिए। अल्लाह तआला ने जो मुख़्तलिफ़ जगहों पर सब्र की तलक़ीन फ़रमाई है और जो सब्र के लफ़्ज़ के हक़ीक़ी अर्थ अल्लाह तआला के अहकाम को सामने रखते हुए लुग़त में वर्णन हुए हैं के मुताबक़ सब्र के तीन अर्थ हैं।

नंबर एक यह कि गुनाह से बचना और अपने नफ़्स को इस से रोकना। दूसर यह कि नेक-आमाल पर इस्तक़लाल से क़ायम रहना और तीसरे अर्थ ये हैं कि जज़ा-फ़ज़ा से बचना। यही अर्थ साधरणतः उर्दू में लिए जाते हैं।

अतः पहले अर्थों की दृष्टि से नियमित और इस्तक़लाल के साथ इन बदियों का मुक़ाबला करना इन्सान का काम है जो उसे अपनी तरफ़ खींच रही हैं और फिर इन बदियों के मुक़ाबले के लिए भी तैयार रहना जो आइन्दा उसे अपनी तरफ़ खींच सकती हैं। अतः यह सब्र इतना ही नहीं कि यह कह कर कि हम बड़े साबिर हैं हाथ पर हाथ रख कर जाएं बल्कि मुस्तक़िल मिज़ाजी से अपने अन्दु-रूने की सफ़ाई करना असल सब्र है और जो ऐसे लोग हों फिर अल्लाह तआला उनकी मदद के लिए ऐसी जगहों से आता है जिसका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

मुख़ालेफ़ीन तो ये चाहते हैं कि हम सब्र का दामन हाथ से छोड़ दें और उन जैसी हरकतें करें ताकि वह अपने उद्देश्य में कामयाब हो सकें लेकिन अल्लाह तआला हमें यह कहता है कि तुमने अक़ल से काम लेना है, अपने अंदर झांकना है कि क्या तुम जो बातें कर रहे हो वह अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ हैं कि नहीं और इस के मुताबिक़ काम करना है।

दूसरे अर्थों की रो से यह वज़ाहत होगी कि इन्सान इस्तक़लाल के साथ इन नेकियों पर क़ायम रहे जो उसे हासिल हो चुकी हैं और उन नेकियों के हुसूल के लिए कोशिश करे जो उसे अभी नहीं मिलीं। यह भी सब्र की एक किस्म है। यह भी हक़ीक़त में एक इन्सान को अल्लाह तआला का क़ुरब दिलाने वाली है और यह क़ुरब ज़ाहिर है, ज़ाहिरी इज़हार के साथ दुआओं से मिल सकता है जिसके बारे में क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला एक जगह फ़रमाता है कि وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ (अल् बकरः : 46) और सब्र और दुआ के द्वारा से अल्लाह से मदद माँगो और बेशक फ़िरोतनी इख़तेयार करने वालों के सिवा दूसरों के लिए यह अमर मुश्किल है। जो अल्लाह का ख़ौफ़ रखने वाले हों, आजिज़ी दिखाने वाले हों वही ऐसे सब्र का मुज़ाहरा कर सकते हैं जो अल्लाह तआला की रज़ा चाहने वाला हों।

फिर आगे एक दूसरी जगह फ़रमाया कि وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ (अल् राद : 23)और जिन्होंने अपने रब की रज़ा की तलब में साबित क़दमी से काम लिया है और नमाज़ को उम्दगी से अदा किया है और जो कुछ हमने उन्हें दिया है इस में से छुप कर भी और ज़ाहिर भी हमारी राह में ख़र्च किया है और जो बदी को नेकी के ज़रीया से दूर करते रहते हैं, उन्ही के लिए इस घर का बेहतरीन अंजाम मुक़द्दर है। और यह घर, यह दुनिया तो आरिज़ी है, यहां तो मुश्किलात हैं। जो अंजाम-कार घर है जो आख़िरी

घर है वे ऐसे लोगों को मिलता है जो अल्लाह तआला की रज़ा चाहते हैं।

अतः सब्र मुस्तक़िल मिज़ाजी, आजिज़ी और दुआओं से अल्लाह तआला की रज़ा चाहने का नाम है और यह उस वक़्त होगा जब हम अपनी हालतों को अल्लाह तआला की तालीम के मुताबिक़ करेंगे और अपनी ज़िंदगियों को गुज़ारेंगे और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करना हमारा उद्देश्य होगा। और फिर जैसा कि वर्णन हुआ है एक अर्थ सब्र का जज़ा फ़ज़ा न करना भी है। ज़ाहिरी इबतेला, बिमारी या माली नुक़्सान या कोई मुश्किल आए तो न ही घबराना है न शिकवे के रंग में शोर मचाना है कि यह अल्लाह तआला ने मुझसे क्या कर दिया। ये चीज़ें बेसबरी की अलामत हैं।

अल्लाह तआला पर शिकवा बिल्कुल ग़लत चीज़ है। हमेशा यह सोच रखनी चाहिए कि जो कुछ मेरे पास है अल्लाह तआला की तरफ़ से इनाम के रंग में है। आज अल्लाह तआला ने लिया है तो कल और दे देगा। अतः यह सोच रखने वाले हक़ीक़ी मोमिन हैं और यही सब्र करने वाले अल्लाह तआला की नज़र में हक़ीक़ी साबिर भी हैं।

अतः ये तीन अर्थ हैं सब्र के। लेकिन यह हमेशा याद रखना चाहिए कि सब्र किसी कमज़ोरी की वजह से न हो, किसी दुनियावी ख़ौफ़ की वजह से न हो बल्कि सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा चाहते हुए हो तो फिर ही वह हक़ीक़ी सब्र है जो अल्लाह तआला के फ़ज़लों को खींचता है।

अगर कोई शख़्स बड़े अफ़िसरों के सामने या बादशाह के सामने उसके ज़ुलम की वजह से इसलिए ख़ामोश रहे कि अल्लाह तआला के हुक्म से सब्र कर रहे हैं तो यह हक़ीक़ी सब्र है और अगर ज़िंदगी के ख़ौफ़ से है तो ये ग़लत चीज़ है।

हम जो सब्र की तलक़ीन करते हैं सिर्फ इसलिए करते हैं कि अल्लाह तआला का यह हुक्म है।

अगर बदला ही लेना है तो कई अहमदी जोश में भरे बैठे होंगे कि हमें अपनी जान की भी पर्वा नहीं है। हम बदला लेकर एक दफ़ा उन ज़ालिमों को मज़ा चखा सकते हैं और चखा देंगे लेकिन यह हम नहीं करेंगे। यह तालीम के ख़िलाफ़ है जो हमें दी गई है और हम ऐसी हरकत से कराहत करते हैं क्योंकि यह अंबिया की जमाअतों का शेवा नहीं है।

और हमने बैअत के अह्द में बनीनौ इन्सान को हर शर से महफ़ूज़ रखने का अह्द भी किया हुआ है। हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सख़्ती से उन बातों से रोका है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने सब्र के ज़िमन में एक यह वज़ाहत भी फ़रमाई कि ये याद रखो कि तुम्हारे अमल से सब्र और बेग़ैरती में फ़र्क़ वाज़िह नज़र आना चाहिए। उदाहरणतः अगर कोई शख़्स अपनी ज़रूरत के लिए किसी शख़्स से रक़म मांगने जाए और दूसरा शख़्स उसे बुरा-भला कहे और बे-हया कहे और बेशरम कहे, बहुत बेइज़्ज़ती करे और मांगने वाला हंस कर उसकी बात को टाल दे और ख़्याल करे कि इस वक़्त में ज़रूरतमंद हूँ इसलिए मुझे उसकी गालियां भी सुन लेनी चाहिऐं तो ये बे-हयाई और बेग़ैरती है लेकिन कभी क़ौमी और मज़हबी अग़राज़ के लिए सब्र करना पड़ता है, ख़ामोश भी रहना पड़ता है और यह सब्र नफ़सानी अग़राज़ के लिए नहीं होता। इसलिए यह हक़ीक़ी सब्र है और बेग़ैरती नहीं है उदाहरणतः किसी ऐसी जगह पर जहां उस के बदला लेने की वजह से इस की क़ौम पर कोई मुसीबत आती है वहां अगर वह हमला करता है और सब्र नहीं करता तो उसे बेवक़ूफ़ कहेंगे क्योंकि इस तरह वह अपनी क़ौम को नुक़्सान में डालना चाहता है। अतः जब वह अपनी क़ौम के नफ़ा के लिए बदला नहीं लेता या दुनिया को नुक़्सान से महफ़ूज़ रखने के लिए सब्र करता है तो उसका यह सब्र, सब्र कहलाएगा।

अतः यह बात हमें याद रखनी चाहिए। बाअज़ लोग बड़े जोश में आ जाते हैं कि फ़ुलां शख़्स को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया है तो इजतेमा करो और जलूस निकालो। तो ये सब चीज़ें ग़लत हैं। दुश्मन तो यह चाहता है कि इस तरह का रद्द-ए-अमल होता कि हम मज़ीद सख़्तियां करें। इन आफ़सरान से मिलकर जो पहले ही हमारे ख़िलाफ़ हैं इन अहमदियों को क़ाबू में करें। उनके निज़ाम पर मज़ीद पाबंदियां लगाने की कोशिश करें या उस का हुकूमत से मुतालबा करें जबकि हुकूमत के कुछ आफ़सरान भी खासतौर पर बल्कि अक्सरीयत ख़िलाफ़ हो। इस वक़्त जबकि हुकूमत के कुछ आफ़सरान उनकी पुश्तपनाही भी कर रहे हैं और फिर ऐसे अवसरों पर मुनाफ़क़ीन भी फ़ायदा उठाते हैं और वहां ऐसे मौक़ों पर इस तरह का रद्देअमल जब हुआ तो हमने देखा कि हालात ख़राब हुए होंगे भी और यह तजुर्बा भी है कि इस तरह के अवसरों पर जब इस तरह रद्द-ए-अमल ज़ाहिर हुआ तो हालात ख़राब भी हुए। कुछ ऐसे वाक़ियात जमाअत की तारीख़ में हैं जिसका फ़ायदा के बजाय नुक़्सान हुआ और जब सब्र का मुज़ाहरा करते हुए हालात को बेहतर करने की क़ानूनी कोशिश की गई, जबकि हर जगह तो सो फ़ीसद नहीं लेकिन बहुत सी जगहों पर इस का फ़ायदा भी हुआ।

यह पैग़ाम हम बहरहाल पहुंचा देते हैं कि हम भी इसी क़ौम के हैं और ग़लत रद्देमल का इज़हार हमसे भी हो सकता है या हम में से किसी शख़्स से हो सकता है लेकिन हम नहीं करते।

यह इस्लामी तालीम के ख़िलाफ़ है और आहिस्ता-आहिस्ता बाअज़ आफ़सरान पर इस का मुसबत असर भी होता है और हुआ है। बाअज़ ऐसी बातें तजुर्बा में आई हैं। अगर हम गालियों के जवाब गालियों और मार-धाड़ के जवाब मार-धाड़ से देना शुरू हो जाएं तो जो ज़ेर तब्लीग़ हैं उन पर तो हम मुसबत असर डालने की बजाय मनफ़ी असर डाल रहे होंगे। फिर उनको यह कहने का हक़ है कि मसीह मौऊद ने आकर उनमें क्या मुसबत तबदीली पैदा कर दी जो हम उनमें शामिल हो जाएं। जैसे उनके मुख़ालेफ़ीन के रवैय्ये हैं वैसे ही मुख़ालेफ़ीन के साथ उनके भी व्यवहार हैं।

सुन्नते अंबिया और अंबिया की जमातों की सुन्नत यह है कि वे सब्र और दुआ से काम लेते हैं जैसा कि अल्लाह तआला का भी हुक्म है, रसूल का भी हुक्म है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें तालीम भी यह दी थी। अतः यह बात हमें हमेशा याद रखनी चाहिए कि हमने जमाअत के वसीअ-तर मुफ़ादात के लिए आरिज़ी और छोटी तकलीफों को सब्र से बर्दाश्त करना है।

बल्कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तो एक अवसर पर यह भी फ़रमाया कि हमें बाअज़ दफ़ा क़ानून का भी दरवाज़ा खटखटाने की ज़रूरत नहीं है। सख़्तियां सब्र से बर्दाश्त करनी चाहिऐं।

बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह बात वर्णन फ़रमाते हुए कि लोग कह सकते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अपनी कुतुब में कुछ सख़्त शब्द प्रयोग किए हैं इसलिए हम भी कर सकते हैं। फ़रमाया कि ऐसे लोगों को याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला और उनके अंबिया की और शान होती है। जैसे हम दुनियावी उदाहरण में देखते हैं कि एक मजिस्ट्रेट है या जज है जो मुल्ज़िम को चोर कहता है तो वह उसका काम है और उसका हक़ है और उस बुनियाद पर वह उस को सज़ा देता है और उस की इस्लाह के लिए कोशिश करता है लेकिन हर एक का काम नहीं है कि वह दूसरों को चोर या मुजरिम कहता फिरे और अगर वह कहेगा तो फ़साद पैदा होगा। अतः अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लोगों की कमज़ोरियाँ ज़ाहिर करके उनकी निशानदेही फ़रमाते हैं तो उनकी इस्लाह के लिए और उनके ग़लत नज़रियात से लोगों को बचाने के लिए यह करते हैं लेकिन जहां तक आप अलैहिस्सलाम की ज़ात का सवाल है अपने बारे में फ़रमाते हैं।

गालियां सुनकर दुआ देता हूँ उन लोगों को
रहम है जोश में और ग़ैज़ घटाया हम ने

और हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यही तालीम दी है कि दूसरों की सख़्तियों को सब्र के साथ झेलो और बर्दाश्त करो

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु उदाहरण देते हुए वर्णन फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लाहौर गाड़ी में बैठे जा रहे थे कि शहर के बदमाश आप पर पत्थर फेंकते जाते थे जो आप की गाड़ी पर आकर लगते थे। घोड़ागाड़ी थी, बंद थी लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माथे पर बल तक न पड़ता था जो कुछ यह कर रहे थे। खिड़की तोड़ के कुछ पत्थर अंदर भी आ जाते थे और जो सब्र था आप का, उसीका असर था कि इन्ही लोगों में से सैंकड़ों हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ग़ुलामी में आकर दाख़िल हो जाते थे। अतः यह अख़लाक़ हमें आज भी दिखाने होंगे।

अगर कोई मुख़ालिफ़त में ज़ाती मुफ़ाद और दिल के उपद्रवों और बुग़ज़ों की वजह से बढ़ा हुआ है तो अल्लाह तआला ख़ुद इससे इंतेक़ाम लेगा बशर्तिके हम सब्र के साथ दुआ से भी काम लें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में कई लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम या सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के सब्र-ओ-हौसला को देखकर ही इस्लाम लाए थे और इस ज़माने में भी ये मिसालें हमें मिलती हैं जैसा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में भी आप के सब्र को देखकर लोग जमात में शामिल हुए।

(उद्धृत ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 9 पृष्ठ 130 से 140) और आज भी और अभी भी हम देखते हैं कुछ ख़ुतूत मुझे मुख़्तलिफ़ मुल्कों से आते हैं कि बहुत सारे लोग जमात की इसी तारीख़ को देखकर जमाअत में शामिल हैं।

जमात को सब्र की तलक़ीन फ़रमाते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "सब्र बड़ा जोहर है। जो शख़्स सब्र करने वाला होता है और ग़ुस्से से भर कर नहीं बोलता उस की तक़रीर अपनी नहीं होती बल्कि ख़ुदा तआला उस से तक़रीर कराता है। जमात को चाहिए कि सब्र से काम ले और मुख़ालेफ़ीन की सख़्ती पर सख़्ती न करे और गालियों के बदले में गाली न दे। जो शख़्स हमारा मुकज़्ज़िब है इस पर लाज़िम नहीं कि वह अदब के साथ बोले।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम ज़रूरी नहीं कि वह अदब के साथ ले। फ़रमाते हैं कि "इस के नमूने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में भी बहुत पाए जाते हैं

सब्र जैसी कोई वस्तु नहीं मगर सब्र करना बड़ा मुश्किल काम है अल्लाह तआला उस की ताईद करता है जो सब्र से काम ले।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 200 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर जमात की हालत का नक़्शा खींचे हुए और नए आने वालों का वर्णन फ़रमाते हुए सब्र की तलक़ीन करते हुए आप फ़रमाते हैं

"हमारी जमात के लिए भी इसी किस्म की मुश्किलात हैं जैसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त मुस्लमानों को पेश आए थे। इसलिए नई और सबसे पहली मुसीबत तो यही है कि जब कोई शख़्स इस जमाअत में दाख़िल होता है तो तुरंत दोस्त रिश्तेदार और बिरादरी अलग हो जाती है। यहां तक कि बाज़-औक़ात माँ बाप और भाई बहन भी दुश्मन हो जाते हैं। अस्स-लामो अलैकुम तक के रवादार नहीं रहते और जनाज़ा पढ़ना नहीं चाहते। इस किस्म की बहुत सी मुश्किलात पेश आती हैं।" फ़रमाया "मैं जानता हूँ कि बाअज़ कमज़ोर तबीयत के आदमी भी होते हैं और ऐसी मुश्किलात पर वह घबरा जाते हैं लेकिन याद रखो कि इस किस्म की मुश्किलात का आना ज़रूरी है। तुम अनबया और रसुल से ज़्यादा नहीं हो। इन पर इस किस्म की मुश्किलात और मसायब आएं और यह इसी लिए आती हैं कि ख़ुदा तआला पर ईमान क़वी हो।" ईमान की मज़बूती के लिए यह मुश्किलात आती हैं। "और पाक तबदीली का अवसर मिले। दुआओं में रहो। अतः यह ज़रूरी है कि तुम अंबिया और रसूल की पैरवी करो और सब्र के तरीक़ को इख़्तेयार करो। तुम्हारा कुछ भी नुक़्सान नहीं होता।

वह दोस्त जो तुम्हें क़बूल-ए-हक़ की वजह से छोड़ता है वह सच्चा दोस्त नहीं है वर्ना चाहिए था कि तुम्हारे साथ होता। तुम्हें चाहिए कि वह लोग जो महिज़ इस वजह से तुम्हें छोड़ते और तुमसे अलग होते हैं कि तुमने ख़ुदा तआला के क़ायम किए हुए सिलसिले में शमूलियत इख़्तेयार कर ली है उनसे दंगा या फ़साद मत करो बल्कि उनके लिए ग़ायबाना दुआ करो।" सिर्फ यह नहीं कि लड़ना नहीं है बल्कि उनके लिए दुआ करो "कि अल्लाह तआला उनको भी वह बसीरत और मार्फ़त अता करे जो उसने अपने फ़ज़ल से तुम्हें दी है।" अतः सिर्फ़ दंगा फ़साद से नहीं रोका बल्कि दुआ करने के लिए कहा। हमदर्दी दिल में रखने के लिए कहाता कि वह भी हक़ को पहचानने वाले बन सकें। फ़रमाया "तुम अपने पाक नमूना और उम्दा चाल चलन से साबित कर के दिखाओ कि तुमने अच्छी राह इख़्तेयार की है।

देखो मैं इस अमर के लिए मामूर हूँ कि तुम्हें बार-बार हिदायत करूँ कि हर किस्म के फ़साद और हंगामा की जगहों से बचते रहो और गालियां सुनकर भी सब्र करो। बदी का जवाब नेकी से दो और कोई फ़साद करने पर आमादा हो तो बेहतर है कि तुम ऐसी जगह से खिसक जाओ।"

क़ुरआन शरीफ़ का भी यह हुक्म है कि वहां से चले जाओ "और नरमी से जवाब दो। बारहा ऐसा होता है कि एक शख़्स बड़े जोश के साथ मुख़ालेफ़त करता है और मुख़ालेफ़त में वह तरीक़ इख़्तेयार करता है जो मुफ़सेदाना तरीक़ हो।"ऐसे मुख़ालिफ़त करता है जिससे फ़साद पैदा होने का ख़तरा हो। "जिससे सुनने वालों में इश्तेआल की तहरीक हो लेकिन जब सामने से नरम जवाब मिलता है और गालियों का मुक़ाबला नहीं किया जाता तो ख़ुद उसे शर्म आ जाती है।" ठीक है बहुत सारे लोग इस ज़माना में तो बेशरम हैं, आगे से उल्टा ज़ुलम भी करते हैं लेकिन बहुत से ऐसे भी हैं जिनको शर्म आ जाती है।" और वह अपनी हरकत पर शर्मिंदा और पशेमान होने लगता है।"

पिछले ख़ुत्बों में मैंने बंगला देश के वाक़ियात वर्णन करते हुए एक उदाहरण भी दी थी कि बुलवाइयों में से एक लड़के को जब हमारे लड़के ने कहा कि तुम्हें पता भी है कि तुम क्या कर रहे हो? किस के नाम पर कर रहे हो? फिर जब उस को समझ आ गई तो उसने ईंट पीछे फेंक दी या पत्थर जो उठाया हुआ था नीचे गिरा दिया। फ़रमाया

"मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि सब्र को हाथ से न जाने दो। सब्र का हथियार ऐसा है कि तोपों से वह काम नहीं निकलता जो सब्र से निकलता है। सब्र ही है जो दिलों को फ़तह कर लेता है"

नि:सन्देह याद रखो कि मुझे बहुत ही रंज होता है जब मैं यह सुनता हूँ कि अमुक शख़्स इस जमात का हो कर किसी से लड़ा है। इस तरीक़ को मैं हरगिज़ पसंद नहीं करता और ख़ुदा तआला भी नहीं चाहता कि वह जमात जो दुनिया में एक नमूना ठहरेगी वह ऐसी राह इख़्तेयार करे जो तक़्वा की राह नहीं है। बल्कि मैं तुम्हें यह भी बता देता हूँ कि अल्लाह तआला यहां तक इस अमर की ताईद करता है कि अगर कोई शख़्स इस जमात में हो कर सब्र और बर्दाश्त से काम नहीं लेता तो वह याद रखे कि वह इस जमात में दाख़िल नहीं है।" बहुत बड़ी तंबीह है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए। फ़रमाया "निहायत इश्तिआल और जोश की यह वजह हो सकती है कि मुझे गंदी गालियां दी जाती हैं।" यही तुम्हें जोश आता है नाँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुझे गंदी गालियां देते हैं तो तुम्हें जोश आ जाता है। फ़रमाया कि "तो इस मुआमला को खुदा के सपुर्द कर दो। तुम उसका फ़ैसला नहीं कर सकते। मेरा मामला खुदा पर छोड़ दो। तुम इन गालियों को सुनकर भी सब्र और बर्दाश्त से काम लो। तुम्हें क्या मालूम है कि मैं इन लोगों से किस क़दर गालियां सुनता हूँ। अक्सर ऐसा होता है कि गंदी गालियों से भरे हुए पत्र आते हैं और खुले कार्डों में गालियां दी जाती हैं। बेरंग ख़ुतूत आते हैं जिनका किराया भी देना होता है।" टिकट लगाए बग़ैर ख़त भेज देते हैं तो वह डाक के टिकट के पैसे भी देने पड़ते हैं "और फिर जब पढ़ते हैं तो गालियों का भंडार होता है। गंदी गालियां होती हैं कि मैं यक़ीनन जानता हूँ कि किसी पैग़ंबर को भी ऐसी गालियां नहीं दी गई हैं और मैं एतबार नहीं करता कि अबू जहल में भी ऐसी गालियों का माद्दा हो।" जैसी गालियां ये लोग देते हैं ऐसी तो अबुजहल ने भी नहीं दी होंगी "लेकिन ये सब कुछ सुनना पड़ता है। जब मैं सब्र करता हूँ तो तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम भी सब्र करो। दरख़्त से बढ़कर तो टहनी नहीं होती।"

अपनी ज़ात के लिए आप में सब्र की इंतेहा थी जैसा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी फ़रमाया था कि अपनी ज़ात के लिए इंतेहा का सब्र है। अगर सख़्ती की है कहीं जो लोगों ने कहा कि जी हज़रत मसीह मौऊद सख़्ती करते हैं तो इस्लाह के लिए है और यह हक अल्लाह तआला की तरफ़ से आप को मिला है। हर एक को यह हक़ नहीं है और जब हक़ नहीं है तो फिर अगर हम ऐसी बातें करेंगे तो इस से इस्लाह की बजाय फ़साद फैलने का, बढ़ने का ज़्यादा भय है।

फिर आप फ़रमाते हैं कि "तुम देखो कि यह कब तक गालियां देंगे। आख़िर यही थक कर रह जाऐंगे। उनकी गालियां उनकी शरारतें और मंसूबे मुझे हरगिज़ नहीं थका सकते।" अतः हमने भी नहीं थकना। "अगर मैं ख़ुदा तआला की तरफ़ से न होता तो बेशक मैं उनकी गालियों से डर जाता लेकिन मैं यक़ीनन जानता हूँ कि मुझे ख़ुदा ने मामूर किया है। फिर मैं ऐसी छोटी बातों की क्या पर्वा करूँ। यह कभी नहीं हो सकता। तुम ख़ुद ग़ौर करो कि उनकी गालियों ने किस

को नुक़्सान पहुंचाया है, उनको या मुझे? उनकी जमात घटी है और मेरी बढ़ी है।' जमात जो बढ़ रही है वह उन्ही लोगों में से तो आ रहे हैं। "अगर यह गालियां कोई रोक पैदा कर सकती हैं तो दो लाख से ज़्यादा जमात किस तरह पैदा हो गई।"

इस ज़माने में जब आप ने यह बात फ़रमाई उस वक़्त जमात की संख्या आप ने बताई कि दो लाख है और आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुनिया के हर मुल्क में आप का पैग़ाम पहुंच चुका है और जमाअत क़ायम है। क्या किसी रद्देअमल और ताक़त के इज़हार से यह हुआ है? नहीं बल्कि क़ुर्बानियों और सब्र और दुआओं का है।

अतः इस बड़े उद्देश्य को हासिल करने के लिए हमें सब्र का मुज़ाहरा करते रहना होगा। फिर आप फ़रमाते हैं कि "ये लोग उनमें से ही आए हैं या कहीं और से? उन्होंने मुझ पर कुफ़्र के फ़तवे लगाए लेकिन इस फ़तवा कुफ़्र की क्या तासीर हुई? जमाअत बढ़ी। अगर यह सिलसिला मन्सूबा बाज़ी से चलाया गया होता तो ज़रूर था कि इस फ़तवा का असर होता और मेरी राह में वह फ़तवा कुफ़्र बड़ी भारी रोक पैदा कर देता लेकिन जो बात ख़ुदा तआला की तरफ़ से हो इन्सान की ताकत नहीं है कि उसे ध्वस्त कर सके। जो कुछ मंसूबे मेरे मुख़ालिफ़ किए जाते हैं पहचान करने वालों को हसरत ही होती है।

मैं खुल कर कहता हूँ कि ये लोग जो मेरी मुख़ालेफ़त करते हैं एक अज़ीमु-श्शान दरिया के सामने जो अपने पूरे ज़ोर से आ रहा है अपना हाथ करते हैं और चाहते हैं कि वह इस से रुक जावे।"

पानी का एक flow आ रहा है दरिया की सूरत में। वह अपना हाथ रख के समझते हैं कि पानी रुक जाएगा "परंतु उसका नतीजा ज़ाहिर है कि वह रुक नहीं सकता। ये उन गालियों से रोकना चाहते हैं परंतु याद रखें कि कभी नहीं रुकेगा। क्या शरीफ़ आदमियों का काम है कि गालियां दे। मैं इन मुस्लमानों पर अफ़सोस करता हूँ कि ये किस किस्म के मुस्लमान हैं जो ऐसी बेबाकी से ज़बान खोलते हैं।" पाकिस्तान में तो उनके जलूस अजीब अजीब गालियां निकाल रहे होते हैं। फ़रमाया "मैं अल्लाह तआला की क़सम खा कर कहता हूँ कि ऐसी गंदी गालियां मैंने तो कभी किसी चूड़े चमार से भी नहीं सुनी हैं जो इन मुस्लमान कहलाने वालों से सुनी हैं।"फ़रमाते हैं "इन गालियों में ये लोग अपनी हालत का इज़हार करते हैं।" गालियों से सिर्फ उनकी अपनी हालत का इज़हार हो रहा है कि उनके ज़हन कैसे हैं, उनके अमल कैसे हैं।"और एतराफ़ करते हैं कि वह फ़ासिक़-ओ--फ़ाजिर हैं। ख़ुदा तआला उनकी आँखें खोले और उन पर रहम करे। (आमीन)' फिर फ़रमाया कि "ऐसे गालियां देने वाले ख़ाह एक करोड़ हों ख़ुदा तआला का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। ये जानते हैं कि एक पैसा का कार्ड ही ज़ाए होगा परंतु नहीं जानते कि इस पैसा के नुक़्सान के साथ नामा-ए-आमाल भी स्याह हो जाएगा कार्ड में जो गालियां लिखते हैं तो अपने नामा-ए-आमाल को भी स्याह कर रहे होते हैं। "फिर मेरी समझ में नहीं आता कि ये गालियां दी क्यों जाती हैं। क्या सिर्फ इस लिए कि मैं कहता हूँ कि कुरान-ए-शरीफ़ को न छोड़ो और आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तक़ज़ीब न करो। ग़ज़ब की बात है कि कुरान-ए-शरीफ़ में लिखा हो कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम फ़ौत हो गए और फिर ज़मीन पर नहीं आएँगे परंतु यह मानने में नहीं आते और इस अकीद--ए-मुख़ालफ़त-ए-क़ुरआन पर उड़ते हैं। अगर मैं न आया होता और ख़ुदा तआला ने एक सिलसिला क़ायम न किया होता तो ये जो कुछ चाहते कहते क्योंकि उनको बेदार करने वाला और आगाह करने वाला उनमें मौजूद नहीं था। लेकिन अब जबकि ख़ुदा तआला ने मुझे मामूर करके भेजा है और मैं वही हूँ जिसको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म क़रार दिया है तो फिर मेरे फ़ैसला पर चूँ चरान करना उनका हक़ नहीं था। तक़्वा का तरीक़ तो ये था कि मेरी बातों को सुनते और ग़ौर करते। इंकार के लिए जल्दी करते।

मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि मेरे आने के बाद उनका हक़ नहीं है कि ये ज़बान खोलें क्योंकि मैं ख़ुदा तआला की तरफ़ से आया हूँ और हकम हो कर आया हूँ।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 203 से 206 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुक्म से जिस सब्र का मयार क़ायम क्या उसका कोई मुक़ाबला ही नहीं कर सकता।

इस का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि "हज़रत-ए-मूसा की क़ौम बनीइसराईल ने उनको तुरंत तुरंत क़बूल कर लिया था। इसलिए क़ौम की तरफ़ से कोई दुख और मुसीबत या रोक उनको पेश नहीं आई।" हज़रत-ए-मूसा को अपनी क़ौम की तरफ़ से तो कोई दुख नहीं पेश आया। फ़िरऔन की तरफ़ से आया था "लेकिन इसके विपरीत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी ही क़ौम से मुश्किलात और इंकार का मरहला पेश आया। फिर ऐसी सूरत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कामयाबियां कैसी आला दर्जा की साबित हुई हैं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कमालात और फ़ज़ायल का सबसे बढ़कर सबूत हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अल्लाह तआला के इज़्न-ओ-अमर से तब्लीग़ शुरू की तो पहले ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह मरहला पेश आया कि क़ौम ने इंकार किया। लिखा है कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश की दावत की और सबको बुला कर कहा कि मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ इसका उत्तर दो। अर्थात मैं अगर तुम्हें यह कहूं कि इस पहाड़ के पीछे एक बड़ी भारी फ़ौज पड़ी हुई है और वह इस घात में बैठी हुई है कि अवसर पाकर तुम्हें हलाक कर दे तो क्या तुम बावर करोगे। सबने बिलइत्तिफ़ाक़ कहा कि बेशक हम इस बात को तस्लीम करेंगे। इस लिए कि तू हमेशा से सादिक़ और अमीन है। जब वह यह इक़रार कर चुके तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया देखो! मैं सच्च कहता हूँ कि मैं ख़द तआला का पैग़ंबर हूँ और तुमको आने वाले अज़ाब से डराता हूँ। इतनी बात कहनी थी कि सब आग हो गए और एक शरीर बोल उठा। تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ "अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हलाकत के शब्द कहे। फ़रमाया कि "अफ़सोस जो बात उनकी निजात और बेहतरी की थी न-आक़ि-बत-अँदेश क़ौम ने इस को ही बुरा समझा और मुख़ालेफ़त पर आमादा हो गए। अब उसके बिल्मुक़ाबिल मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम को देखो। बनीइसराईल बावजूद एक सख़्त दिल क़ौम थी लेकिन उन्होंने हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ पर फ़ौरन ही इस को क़बूल कर लिया और इस तरफ़ मूसा अलैहि-स्सलाम से अफ़ज़ल को क़ौम ने तस्लीम किया।" आप मज़ीद आगे वर्णन करने के लिए हज़रत-ए-मूसा की क़ौम की उदाहरण दे रहे हैं कि हज़रत-ए-मूसा को तो उन्होंने तस्लीम कर लिया लेकिन हज़रत-ए-मूसा से जो अफ़ज़ल नबी थे उनको तस्लीम नहीं किया। "और मुख़ालेफ़त के लिए तैयार हो गए।" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए। "मसायब का सिलसिला शुरू हो गया।" और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए। "आए दिन क़तल के मंसूबे होने लगे और यह ज़माना इतना लंबा हो गया कि तेराह बरस तक बराबर चला गया। तेराह बरस का ज़माना कम नहीं होता। इस अरसा में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिस क़दर दुख उठाए उनका वर्णन भी आसान नहीं है। क़ौम की तरफ़ से तकालीफ़ और इज़ार सानी में कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ी जाती थी और इधर अल्लाह तआला की तरफ़ से सब्र और इस्तिक़लाल की हिदायत थी।" उधर तकलीफ़ें हो रही हैं और अल्लाह तआला फ़र्मा रहा है सब्र करो और मुस्तक़िल मिज़ाजी से क़ायम रहो। यही सब्र के हक़ीक़ी अर्थ हैं "और बार-बार हुक्म होता था कि जिस तरह पहले नबियों ने सब्र किया है तू भी सब्र कर और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कमाल-ए-सब्र के साथ इन तकालीफ़ को बर्दाश्त करते थे और तब्लीग़ में सुस्त न होते थे बल्कि क़दम आगे ही पड़ता था। और असल यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सब्र पहले नबियों का साना था क्योंकि वे तो एक महिदूद क़ौम के लिए अवतरित हो कर आए थे इसलिए उनकी तकालीफ़ और ईज़ा-रसानियाँ भी इसी हद तक महिदूद होती थीं लेकिन इस के मुक़ाबला में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सब्र बहुत ही बड़ा था क्योंकि सबसे अव्वल तो अपनी ही क़ौम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुख़ालिफ़ हो गई और इज़ार सानी के दर पर हुई और फिर ईसाई भी दुश्मन हो गए।

जब उन को सुनाया गया कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम सिर्फ एक ख़ुदा के बंदे और रसूल थे तो उनको आग लग गई क्योंकि वह तो उनको ख़ुदा बनाए बैठे थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आकर हक़ीक़त खोल दी। यह क़ायदा की बात है कि इन्सान जिसको ख़ुदा बना लेता है और अपना उपास्य मानता है इस का छोड़ना आसान नहीं होता बल्कि फिर इसको छोड़ना बहुत ही

मुश्किल हो जाता है। ईसाइयों का यह एतेक़ाद पुख़्ता हो गया हुआ था। इस लिए जब उन्होंने सुना कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके मसनूई ख़ुदा को इन्सान बना दिया तो वह दुश्मन-ए-जान गए।" एक तरफ़ अपनी क़ौम दुश्मन, काफ़िर दुश्मन, बुतपरस्त दुश्मन फिर ईसाई भी दुश्मन हो गए। "और इसी तरह पर यहूदियों में बहुत सी मुशरिकाना रसूमात पैदा हो गई थीं।" फिर आगे यहूदियों का ज़िक्र आ गया। उनमें मुशरिकाना रसूमात पैदा हो गई थीं "और वह हज़रत मसीह का बिल्कुल इंकार करते थे।" हज़रत ईसा के मानने के लिए तैयार नहीं थे "जब उनको अवगत किया गया तो वे भी मुख़ालेफ़त के लिए उठ खड़े हुए।" अब यहूदी भी, ईसाई भी, मुशरिक भी, दूसरे मज़ाहिब वाले भी सब मुख़ालिफ़ हो गए क्योंकि यहूदी "वह तो हज़रत मसीह को हम इस बात से अल्लाह की शरण मक्कार और कज़्ज़ाब कहते थे। बिल्मुक़ाबिल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको बताया कि तुम उनको कज़्ज़ाब कहने मैं ख़ुद कज़्ज़ाब हो। वह खुदा तआला का एक बर्गज़ीदा नबी है। इसके इलावा उनकी मुख़ालेफ़त की एक बड़ी भारी वजह यह हुई कि वह अपनी बेवक़ूफ़ी और कम फ़ह्मी से यह समझे बैठे थे कि ख़ातमुल अंबिया बनीइसराईल में से आएगा क्योंकि तौरेत में जैसा कि सुन्नतुल्लाह है। आख़िरी नबी के मुताल्लिक़ जो भविष्यवाणी है वह ऐसे अलफ़ाज़ में है जिससे उनको यह संदेह पैदा हो गया था। वहां लिखा है कि तुम्हारे भाईयों में से। वह इस से मुराद बनीइसराईल ही लिए बैठे थे हालाँकि इस से मुराद बनी इस्माईल थी। अतः जब उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दावा सुना कि वह ख़ातमुल अंबिया हैं तो उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया और जो कुछ वह तौरेत की इस भविष्यवाणी के मुवाफ़िक़ समझे बैठे थे वह ग़लत क़रार दिया गया। इस से उनके आग लगी और वो मुख़ालेफ़त के लिए उठ खड़े हुए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 198 से 200 ऐडीशन 1984 ई.)

एक अहमदी किसी गांव से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपने गांव में मौलवी की मुख़ालेफ़त का ज़िक्र किया और दुआ के लिए कहा और यह "अर्ज़ की कि मेरे गांव में एक मौलवी जो मदर्रसा में मुलाज़िम है सख़्त मुख़ालिफ़ है और मुझे बहुत तकलीफ़ देता है। हुज़ूर दुआ करें कि ख़ुदा तआला उस की तबदीली वहां से कर दे। हज़रत-ए-अक़दस ने उस मौक़ा पर फ़रमाया " मुस्कुराए "और फिर उसे इस तरह समझाया"फ़रमाया" कि इस जमात में जब दाख़िल हुए हो तो इस की तालीम पर अमल करो। अगर तकालीफ़ नहीं पहुंचीं तो फिर सवाब क्योंकर हो।

पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का में तेराह बरस दुख उठाए। तुम लोगों को उस ज़माने की तकालीफ़ की ख़बर नहीं और न वे तुमको पहुंचें हैं परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को सब्र ही की तालीम दी। आख़िर कार सब दुश्मन फ़ना हो गए। एक ज़माना क़रीब है कि तुम देखोगे कि ये शरीर लोग भी नज़र नहीं आएँगे। अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि इस पाक जमात को दुनिया में फैलाए। अब उस वक़्त ये लोग तुम्हें थोड़े देख कर दुख देते हैं परंतु जब यह जमात कसीर हो जाएगी तो ये सब ख़ुद ही चुप हो जाऐंगे। अगर ख़ुदा तआला चाहता तो ये लोग दुख न देते और दुख देने वाले पैदा न होते परंतु ख़ुदा तआला उनके ज़रीया से सब्र की तालीम देना चाहता है। थोड़ी मुद्दत सब्र के बाद देखोगे कि कुछ भी नहीं है। जो शख़्स दुख देता है या तो तौबा कर लेता है या फ़ना हो जाता है। कई ख़त इस तरह के आते हैं कि हम गालियां देते थे और सवाब जानते थे लेकिन अब तौबा करते हैं और बैअत करते हैं। सब्र भी एक इबादत है ख़ुदा तआला फ़रमाता है। "फ़रमाया कि सब्र भी एक इबादत है ख़ुदा तआला फ़रमाता" कि सब्र वालों को वह बदले मिलेंगे जिनका कोई हिसाब नहीं है। अर्थात उन पर बे-हिसाब इनाम होंगे। यह अज्र सिर्फ़ साबिरों के वास्ते है। दूसरी इबादत के वास्ते अल्लाह तआला का यह वादा नहीं है। जब एक शख़्स एक की हिमायत में ज़िंदगी बसर करता है तो जब उसे दुख पर दुख पहुंचता है तो आख़िर हिमायत करने वाले को ग़ैरत आती है और वह दुख देने वाले को तबाह कर देता है। इसी तरह हमारी जमाअत ख़ुदा तआला की हिमायत में है और दुख उठाने से ईमान क़वी हो जाता है। सब्र जैसी कोई वस्तु नहीं है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 234-235 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर एक अवसर पर कुछ लोग जो बैअत की ग़रज़ से कादियान आए हुए थे उनको नसीहत करते हुए आप ने फ़रमाया : "दुनयावी लोग अस्बाब पर भरोसा करते हैं परंतु अल्लाह तआला इस बात के लिए मजबूर नहीं है कि अस्बाब का मुहताज हो। कभी चाहता है तो अपने प्यारों के लिए बिन अस्बाब भी काम कर देता है और कभी अस्बाब पैदा कर के करता है और किसी वक़्त ऐसा भी होता है कि बने-बनाए अस्बाब को बिगाड़ देता है। उद्देश्य अपने आमाल को साफ़ करो और ख़ुदा तआला का हमेशा ज़िक्र करो और ग़फ़लत न करो। जिस तरह भागने वाला शिकार जब ज़रा सुस्त हो जावे तो शिकारी के क़ाबू में आ जाता है इसी तरह ख़ुदा तआला के ज़िक्र से ग़फ़लत करने वाला शैतान का शिकार हो जाता है। तौबा को हमेशा ज़िंदा रखो और कभी मुर्दा न होने दो।" कभी बग़ैर तौबा के न रहो हमेशा तौबा करते रहो "क्योंकि जिस अंग से काम लिया जाता है वही काम दे सकता है और जिसको बेकार छोड़ दिया जाए फिर वह हमेशा के वास्ते नाकारा हो जाता है। इसी तरह तौबा को भी मुतहर्रिक रखो ताकि वह बेकार न हो जाए।

अगर तुमने सच्ची तौबा नहीं की तो वह इस बीज की तरह है जो पत्थर पर बोया जाता है। और अगर वह सच्ची तौबा है तो वह इस बीज की तरह है जो उम्दा ज़मीन में बोया गया है और अपने वक़्त पर फल लाता है।

आजकल इस तौबा में बड़ी बड़ी मुश्किलात हैं। "इन नए बैअत करने वालों को फ़रमाया कि "अब यहां से जा कर तुमको बहुत कुछ सुनना पड़ेगा और लोग क्या-क्या बातें बनाएंगे कि तुमने एक मजज़ूम, काफ़िर, दज्जाल इत्यादि की बैअत की।" गालियां देंगे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को। "ऐसा कहने वालों के सामने जोश हरगिज़ मत दिखाना।" ऐसा कहने वालों के सामने जोश हरगिज़ मत दिखाना।

"हम तो अल्लाह तआला की तरफ़ से सब्र के वास्ते मामूर किए गए हैं।"

अतः ये बातें हैं जो हमें हमेशा याद रखनी चाहिऐं। फ़रमाते हैं कि "इस लिए चाहिए कि तुम उनके लिए दुआ करो कि ख़ुदा तआला उनको भी हिदायत दे।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस काम के लिए मामूर किए गए हैं वह सब्र है अतः हमारी भी कामयाबी इसी में है कि आप के नक़श-ए-क़दम पर चलें।

फ़रमाया "..हमारे ग़ालिब आने के हथियार अस्तग़फ़ार तौबा।" रद्द-ए--अमल नहीं। हमारे ग़ालिब आने के हथियार वैसा रद्द-ए-अमल है जबकि "हमारे ग़ालिब आने के हथियार अस्तग़फ़ार, तौबा, दीनी उलूम की वाक़फ़ीयत, ख़ुदा तआला की अज़मत को मद्द-ए-नज़र रखना और पांचों वक़्त की नमाज़ों को अदा करना हैं।

नमाज़ दुआ की क़बूलियत की कुंजी है जब नमाज़ पढ़ो तो इस में दुआ करो और ग़फ़लत न करो। और हर एक बदी से चाहे वह हुक़ूक़ इलाही के संबंध में हो चाहे हुक़ूकुल-ईबाद के मुताल्लिक़ हो बचोगे।" (मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 303 ऐडीशन 1984 ई) हर बदी से बचोगे अतः ये वे नसाएह हैं जो हमारी कामयाबी और तरक़्क़ी की बुनियाद हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद के मुताबिक़ अगर हम सही रंग में अस्तग़फ़ार, तौबा, दीनी उलूम से आगाही और पाँच वक़्त की नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा देते रहेंगे तो हमारी कामयाबी है। दुश्मन जितना चीख चिल्ला रहे हों उतना ही हमें अल्लाह तआला की तरफ़ ज़्यादा झुकना होगा। यही हमारी कामयाबी का राज़ है। इसी की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार तलक़ीन फ़रमाई है। न कि किसी किस्म के रद्देअमल दिखाने की। हमारी कामयाबी बहरहाल मुक़द्दर है जैसा कि आप ने फ़रमाया। इन शा अल्लाह।

हाँ यह बात याद रखनी चाहिए कि हिक्मत से हमने अपने काम को भी जारी रखना है। बहुत से काम हिक्मत से हो सकते हैं। इसलिए हिक्मत इख़्तेयार करना बहुत ज़रूरी है। अगर हर अहमदी अपनी इस ज़िम्मेदारी को समझ ले तो बहुत से मसायल का हल हमारे व्यवहार और दुआओं से निकल सकता है। अल्लाह तआला हमें सब्र अता फ़रमाए और दुआओं की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अपनी रज़ा के हुसूल के लिए इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

"तुम्हारी मानवजाति से ऐसी नेकी हो कि इस में दिखावा और बनावट हरगिज़ न हो" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हक़ीक़ी मोमिन की यही निशानी है कि अपने ईमान को मज़बूत करने के लिए अल्लाह तआला के इर्शादात पर और नसाएह पर अमल करे

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आयत-ए-करीमा की तफ़सीर ऐसे आरिफ़ाना रंग में वर्णन फ़रमाई है जिस से हक़ीक़ी रंग में ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ का इर्फ़ान मिलता है जो एक मोमिन को ईमान और यक़ीन की नई मंज़िलों तक ले जाता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वालों का फ़र्ज़ है, यह ज़िम्मेदारी है कि अल्लाह तआला के हुक्मों को सामने रखते हुए अपनी भी इस्लाह करें और दुनिया की इस्लाह की भी कोशिश करें

"ऐसी पाक तालीम न हमने तौरेत में देखी है और न इंजील में। पृष्ठ पृष्ठ करके हमने पढ़ा है परंतु ऐसी पाक और मुकम्मल तालीम का नाम-ओ--निशान नहीं।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में सूरत अल्नहल की आयत 91 में वर्णित नेकियों अर्थात अदल, एहसान और اِیۡتَآءِ ذِی الۡقُرۡبٰی से संबंधित ईमान बढ़ाने वाला वर्णन

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 05 मई 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

اَشۡهَدُ اَنۡ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ
وَاَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ
-اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ
-بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ
اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ○ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○
مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ○ اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ○
اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ غَيۡرِ
الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ○

اِنَّ اللّٰهَ يَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَالۡاِحۡسَانِ وَاِيۡتَآءِ ذِی الۡقُرۡبٰی وَيَنۡهٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡكَرِ وَالۡبَغۡیِ ۚ يَعِظُكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ

(अल् नहल : 91)

अल्लाह निसन्देह अदल का और एहसान का और ग़ैर रिश्तेदारों को भी करीब वाले शख़्स की तरह जानने और इसी तरह मदद देने का हुक्म देता है और प्रत्येक किस्म की बे-हयाई और नापसंदीदा बातों और बग़ावत से रोकता है वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम समझ जाओ

यह आयत प्रत्येक जुमा के ख़ुतबा सानिया और ईदैन के ख़ुतबा सानिया में भी पढ़ी जाती है। इस में बाअज़ नेकियों का वर्णन किया गया है जिनके करने का अल्लाह तआला हुक्म फ़रमाता है और बुराईयों का वर्णन है जिन से रोकने का अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया और

हक़ीक़ी मोमिन की यही निशानी है कि अपने ईमान को मज़बूत करने के लिए अल्लाह तआला के इर्शादात पर और नसाएह पर अमल करे

वर्ना वह मुक़ाम नहीं मिलता जो एक मुस्लमान को हक़ीक़ी मोमिन बनाता है

इस आयत में जिन नेकियों का वर्णन किया गया है अर्थात अदल, एहसान और اِیۡتَآءِ ذِی الۡقُرۡبٰی। उनके हवाले से मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात जो आप ने अपनी मुख़्तलिफ़ कुतुब में तहरीर फ़रमाए और जो मुख़्तलिफ़ मजालिस में वर्णन फ़रमाए पेश करूँगा।

प्रत्येक इरशाद जबकि एक ही मकेंद्र के गर्द घूम रहा है लेकिन मुख़्तलिफ़ रंग में नसाएह हैं जो हमें हमारी ज़िंदगी अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ गुज़ारने की तरफ़ राहनुमाई करती हैं। आप ने इन ख़सुसीआत और नेकियों का सिर्फ इन्सानों से ताल्लुक़ात के ज़िमन में ही वर्णन नहीं फ़रमाया बल्कि इस बात को भी वर्णन फ़रमाया है कि ख़ुदा तआला के साथ किस तरह अदल, एहसान और اِیۡتَآءِ ذِی الۡقُرۡبٰی है।

आप ने इस की तफ़सीर ऐसे आरिफ़ाना रंग में वर्णन फ़रमाई है जिससे हक़ीक़ी रंग में ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ का इर्फ़ान मिलता है जो एक मोमिन को ईमान और यक़ीन की नई मंज़िलों तक ले जाता है।

बहरहाल इस वक़्त में कुछ हवाले आपके सामने पेश करूँगा। इन पर इन्सान ग़ौर करे और अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाने की कोशिश करे तो एक ऐसा लाहे अमल हमें मिलता है जो हक़ीक़त में हमें ख़ुदा तआला के साथ भी जोड़ता है और एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ भी तवज्जा दिलाता है और यूं एक ऐसे हसीन समाज को भी क़ायम करता है जो हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल-ईबाद अदा करने वाला मुआशरा है और यही चीज़ है जो मुआशरे के अमन की भी ज़मानत है और दुनिया के अमन की भी ज़मानत है लेकिन अफ़सोस है कि दुनिया की अक्सरीयत एक दूसरे के हुक़ूक़ ग़सब करने पर तुली हुई है चाहे वह मुस्लमान दुनिया है या ग़ैरमुस्लिम दुनिया है। मुस्लमान अल्लाह तआला का नाम तो लेते हैं लेकिन अल्लाह तआला के नाम पर ज़ुलम-ओ-ताद्दी में बढ़े हुए भी ऐसे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वालों का फ़र्ज़ है, यह ज़िम्मेदारी है कि अल्लाह तआला के हुक्मों को सामने रखते हुए अपनी भी इस्लाह करें और दुनिया की इस्लाह की भी कोशिश करें।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "ख़ुदा का तुम्हें यह हुक्म है कि तुम इस से और इस की ख़लक़त से अदल का मुआमला करो। अर्थात हक़्क़-ल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद बजा लाओ और अगर इस से बढ़कर हो सके तो न सिर्फ अदल बल्कि एहसान करो यानी फ़रायज़ से अधिक और ऐसे इख़लास से ख़ुदा की बंदगी करो कि गोया तुम उस को देखते हो।" पहले तो हुक़ूकुल ईबाद के बारे में बताया। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा की बंदगी भी ऐसे अंदाज़ से करो कि गोया तुम उसे देखते हो" और हुक़ूक़ से अधिक लोगों के साथ प्रमे का व्यवहार करो और अगर इस से बढ़कर हो सके तो ऐसे बे इल्लत और बे-ग़र्ज़ ज़ाती ख़ाहिशात से बाला हो कर, बेग़र्ज़ हो कर बग़ैर किसी उद्देश्य के ख़ुदा की इबादत करो "ख़ुदा की इबादत और मानवजाति की ख़िदमत बजा लाओ।" अर्थात अल्लाह तआला की इबादत भी बेग़र्ज़ हो कर करो। किसी ग़रज़ के लिए नहीं अल्लाह के सामने जाना। और अल्लाह की मख़लूक़ की ख़िदमत है तो वह भी बेग़र्ज़ हो के करो" कि जैसे कोई क़राबत के जोश से करता है।"

(शहनाए-हक़, रुहानी ख़ज़ायन भाग 2 पृष्ठ 361-362)

फिर उस आयत के मुताबिक़ अल्लाह तआला का हक़ अदा करने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए मज़ीद खोल के आप अलैहिस्सलाम ने बताया।

बंदों के हुक़ूक़ किस तरह अदा करने हैं।

वह भी बताया। फ़रमाया : "पहले तौर पर इस आयत के यह अर्थ हैं कि तुम अपने ख़ालिक़ के साथ उसकी इताअत में अदल का तरीक़ ध्यान रखो ज़ालिम न बनो।" हमेशा उस का ख़्याल रखो। हमेशा अदल का तरीक़ बजा लाओ अल्लाह तआला की इताअत में। "अतः जैसा कि दरहक़ीक़त अतिरिक्त इसके कोई भी उपासना के योग्य नहीं। कोई भी मुहब्बत के लायक़ नहीं। कोई भी तवक्कुल के लायक़ नहीं क्योंकि बाव्जाह ख़ालक़ीयत और क्यूमिय्यत व रबूबियत ख़ास्सा के हर-यक हक़ उसी का है।" अल्लाह तआला से अदल क्या है? इताअत का ताल्लुक़ अल्लाह तआला से रखना है और इताअत का ताल्लुक़ इसलिए रखना है कि वो हमारा ख़ालिक़ है, वह क़ायम है और क़ायम रखने वाला है। रबूबियत उस के हाथ में है। वह रब है। वह पालने वाला है। हमारी प्रत्येक ज़रूरत को पूरा करने वाला है। इसलिए यह हक़ उसी का है कि इस पर तवक्कुल किया जाए, उस से मुहब्बत की जाए। "ईसी तरह तुम भी इस के साथ किसी को उसकी प्रसतिश में और इस की मुहब्बत में और उस की रबूबियत में शरीक मत करो। अगर तुमने इस क़दर कर लिया तो यह अदल है जिसकी रियाइत तुम पर फ़र्ज़ थी।" यह अदल है अल्लाह तआला के मुआमले में। इस को करना ज़रूरी है। "फिर अगर इस पर तरक़्क़ी करना चाहो।" इस से अगला क़दम उठाना है "तो एहसान का दर्जा है और वह यह है कि तुम उसकी अज़मतों के ऐसे क़ायल हो जाओ और इस के आगे अपनी प्रसतिशों में ऐसे आज्ञाकारी बन जाओ और उस की मुहब्बत में ऐसे खोए जाओ कि गोया तुमने उसकी अज़मत और जलाल और उस के हुस्न-ए-लाज़वाल को देख है।" अगला क़दम एहसान का है। एहसान तो अल्लाह तआला पर नहीं कर सकते लेकिन यहां इस से मुराद यह है कि उस की उपासना में, उसके इज़्ज़त और एहतराम में, उस की मुहब्बत में इतने अधिक खो जाओ कि गोया तुमने उस की अज़मत को भी देख लिया, उस के जलाल को भी देख लिया, उस की सिफ़ात का तुमने अध्ययन कर लिया। इसके हुस्न-ए-लाज़वाल को देख लिया। फिर फ़रमाया कि "बाद इसके اِیۡتَآءِ ذِی الۡقُرۡبٰی का दर्जा है और वह यह है कि तुम्हारी प्रसतिश और तुम्हारी मुहब्बत और तुम्हारी फ़रमांबर्दारी से बिल्कुल तकल्लुफ़ और दिखावा दूर हो जाए।" पहले तो हो सकता है एहसान के रंग में जो तुम कर रहे हो, कोशिश कर रहे हो तो तकल्लुफ़ हो, थोड़ी सी बनावट करनी पड़े, कोशिश करनी पड़े, लेकिन फिर यह ऐसा मुक़ाम हासिल कर लो कि बिल्कुल तकल्लुफ़ और बनावट दूर हो जाए। एक दिल का जोश और भावना से तुम अल्लाह तआला की इबादत करने वाले और उस की अज़मत और जलाल को पहचानने वाले बन जाओ "और तुम उस को ऐसे जिगरी ताल्लुक़ से याद करो कि जैसे उदाहरणतः तुम अपने बापों को याद करते हो और तुम्हारी मुहब्बत उस से ऐसी हो जाएगी कि जैसे उदाहरणतः बच्चा अपनी प्यारी माँ से मुहब्बत रखता है।"

फिर फ़रमाया : "और दूसरे तौर पर जो हमदर्दी'जो हुक़ूकुल ईबाद के बारे में है। "बनीनौ से मुताल्लिक़ है इस आयत के यह माने हैं कि अपने भाईयों और बनीनौ से अदल करो और अपने हुक़ूक़ से अधिक उनसे कुछ तार्रुज़ न करो और इन्साफ़ पर क़ायम रहो।" अदल क़ायम करो। जहां तक तुम्हारा हक़ है वह तो बेशक उनसे माँगो लेकिन इन्साफ़ पर क़ायम रहते हुए। ग़लत किस्म के मुतालबे न हों। "और अगर इस दर्जा से तरक़्क़ी करनी चाहो तो इस से आगे एहसान का दर्जा है और वह यह है कि तू अपने भाई की बदी के मुक़ाबिल नेकी करे।"

अगर कोई तुम्हारे साथ बुरा करता है तो इस से नेकी करो यह एहसान है। "और इसके कष्ट देने के बदले में तू उसको राहत पहुँचावे। "अगर वह तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाता है तो तुम उसको राहत पहुँचाओ। उसे ख़ुशी पहुंचाने की कोशिश करो "और प्रेम और एहसान के तौर पर देखभाल करे। फिर बाद इस के اِیۡتَآءِ ذِی الۡقُرۡبٰی दर्जा है और वह यह है कि तू जिस क़दर अपने भाई से नेकी करे या जिस क़दर बनीनौ की ख़ैर ख़्वाही बजा लावे उस से कोई और किसी किस्म का एहसान मंज़ूर न हो।"

इस का मतलब कोई भी एहसान न हो "बल्कि तिब्बी तौर पर बग़ैर मक़्सद किसी ग़रज़ के वह तुझ से सादर हो। ऐसे काम करो जो तिब्बी तौर पर हो रहे हैं। "जैसी शिद्दत-ए-क़राबत के जोश से एक ख़वेश दूसरे ख़वेश के साथ नेकी करता है।' एक रिश्तेदार दूसरे रिश्तेदार से, एक क़रीबी दूसरे क़रीबी से नेकी करता है। कोई ग़रज़ नहीं बल्कि दिल्ली जोश हो। "सो ये अख़लाक़ी तरक़्क़ी का आख़िरी कमाल है कि हमदर्दी ख़लाइक़ में कोई नफ़सानी मतलब या मुद्दा याग़रज़ दरमयान ना हो बल्कि उख़ुवत वक्र इबत-ए-इन्सानी का जोश इस आला दर्जा पर नशव-ओ-नुमा पा जाये कि ख़ुद बख़ुद बग़ैर किसी तकल्लुफ़ के और बग़ैर पेशनिहाद रखने किसी किस्म की शुक्रगुज़ारी' के, बग़ैर किसी किस्म की शुक्रगुज़ारी की ख़ाहिश रखने के "या दुआ या और किसी किस्म की पादाश के वो नेकी फ़क़त फ़ितरती जोश से सादर हो।"

(इज़ाला औहाम हिस्सा दोम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 550 से 552)

या यह हो कि तुम्हारी शुक्रगुज़ारी करे या तुम्हारे लिए कोई दुआ करे। कोई और नेकी किसी की ख़ाहिश हो। तुम्हें किसी दूसरे से किसी किस्म की ख़ाहिश नहीं होनी चाहिए बल्कि विशेषता उस की क़ुरबत के ताल्लुक़ की वजह से यह काम हो। अतः

यह वह सुलूक है जो सबसे पहले तो हमें आपस में एक दूसरे से करना चाहिए और उसे वसीअ करते हुए फिर दूसरों तक पहुंचाना है

फिर हुक़ूकुल्लाह के हवाले से मज़ीद फ़रमाते हैं कि "हुक़ूकुल्लाह के पहलू से इस आयत के ये अर्थ हैं कि इन्साफ़ की पाबंदी से ख़ुदा तआला की इताअत कर क्योंकि जिसने तुझे पैदा किया और तेरी परवरिश की और हर समय कर रहा है उस का हक़ है कि तू भी उस की इताअत करे।" अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया परवरिश की, परवरिश कर रहा है, दुनिया के सामान मुहय्या कर रहा है उस का हक़ बनता है कि उस की इताअत करो। "और अगर इस से अधिक तुझे बसीरत हो तो न सिर्फ रियाइत अहक़ से बल्कि एहसान की पाबंदी से उसकी इताअत कर।" पहला तो अदल है कि ख़्याल रखो कि हमें उसने पैदा किया और हमारी ज़रूरियात पूरी कर रहा है हमने इताअत करनी है बल्कि इस से बढ़कर अगला क़दम है एहसान की पाबंदी से उस की इताअत कर "क्योंकि वह मुहसिन है और उस के एहसान इस क़दर हैं कि शुमार में नहीं आ सकते।" अल्लाह तआला के एहसान गिनने शुरू करो। फिर उसके एहसान की इताअत करो तो यह है एहसान का मुक़ाम।" और ज़ाहिर है कि अदल के दर्जा से बढ़कर वह दर्जा है जिसमें इताअत के वक़्त एहसान भी मलहूज़ रहे और

चूँकि हर वक़्त मुताला और मुलाहिज़ा एहसान का मोहसिन की शक्ल और शमायल को हमेशा नज़र के सामने ले आता है इस लिए एहसान की तारीफ़ में यह बात दाख़िल है कि ऐसे तौर से इबादत करे कि गोया ख़ुदा तआला को देख रहा है।"

अतः यह है कि जब एहसान का रंग हो तो वह एहसान का रंग यह है कि मुहसिन जो है, जिसने एहसान किया वह अल्लाह तआला पर एहसान तो कर नहीं सकता अल्लाह तआला के एहसान हैं जिनको याद करना इन्सान को एहसान करने वाला बनाता है और अल्लाह तआला के एहसानों को याद करने के लिए आप ने फ़रमाया कि यह तरीक़ा होता है कि कोई जो तुम पर एहसान कर रहा हो तो उस की शक्ल और उस की विशेषताएं तुम्हारे सामने आ जाती हैं। और जब वह सामने आती हैं तो तुम्हारा एक दिल्ली ताल्लुक़ फिर इस से पैदा हो जाता है और फिर अल्लाह तआला के मुआमले में जब यह ताल्लुक़ पैदा होगा तो फिर तुम ख़ालिस हो कर उसकी इबादत करोगे और वह इबादत ऐसी है जैसी कि यह कि तुम्हारे दिल में ख़्याल पैदा हो, इबादत करते हुए दिमाग़ में आए कि तुम ख़ुदा तआला को देख रहे हो

फिर फ़रमाया कि "और ख़ुदा तआला की इताअत करने वाले वास्तव में तीन किस्म पर मुनक़सिम हैं।

प्रथम वे लोग जो शर्मिंदगी के कारण और देखने के कारण के एहसान इलाही का अच्छी तरह मुलाहिज़ा नहीं करते। पर्दा पड़ा हुआ है इन पर या अस्बाब पर अधिक भरोसा है इसलिए अल्लाह तआला के एहसानात को वह सही तरह समझ नहीं सकते जान नहीं सकते और न वह जोश उनमें पैदा होता है क्योंकि जान नहीं सकते इसलिए जोश भी पैदा नहीं होता जो एहसान की अज़मतों पर नज़र डाल कर पैदा हुआ करता है और न वे मुहब्बत उनमें हरकत करती है जो मुहसिन की बड़ी इनायात का तसव्वुर करके जुंबिश में आया करती है। सही तसव्वुर ही अल्लाह तआला का जब पैदा नहीं होगा। इस की शक्ल ही सामने नहीं आएगी उस के एहसानों का ख़्याल ही पैदा नहीं होगा। इस के बारे में, अल्लाह तआला की रबूबियत के बारे में इन्सान हक़ीक़त में सोचेगा नहीं तो फिर वह जोश पैदा नहीं हो सकता। फ़रमाया कि मोहसिन की इनायत-ए-अज़ीमा का तसव्वुर करके दिल की जो कैफ़ीयत जुंबिश में आया करती है, एक मुहसिन की जो इनायात हैं उनका तसव्वुर कर के जो दिल में पैदा होती है, वैसी फिर पैदा नहीं होगी। "बल्कि सिर्फ एक अजमाली नज़र से ख़ुदा तआला के हुक़ूक़ ख़ालक़ीयत इत्यादि को तस्लीम कर लेते हैं। ऐसे लोग सरसरी तौर पर अल्लाह तआला की ख़ालक़ीयत को तस्लीम कर लेते हैं कि हाँ अल्लाह तआला ख़ालिक़ है

उसने हमें बनाया है लेकिन इसकी गहराई का उनको इलम नहीं होता। और एहसान--ए-इलाही की इन तफ़सीलात को जिन पर एक बारीक नज़र डालना इस हक़ीक़ी मोहसिन को नज़र के सामने ले आता है हरगिज़ मुशाहिदा नहीं करते। गहराई से यह नहीं देखते कि अल्लाह तआला की ख़ालक़ीयत का हक़ जो है वह हमसे क्या तक़ाज़ा करता है। इस का गहराई में मुताला नहीं करते क्योंकि अस्बाब परस्ती का गर्द-ओ-ग़ुबार मुसब्बिब-ए-हक़ीक़ी का पूरा चेहरा देखने से रोक देता है। दुनियावी अस्बाब जो हैं उनकी गर्द चढ़ी होती है, उनका ग़ुबार चढ़ा होता है इन पर जिसकी वजह से अल्लाह तआला का सही चेहरा उनको नज़र नहीं आता इस लिए उनको वह साफ़ नज़र मयस्सर नहीं आती जिससे कामिल तौर पर हक़ीक़ी का जमाल मुशाहिदा कर सकते । जो अता करने वाला है हक़ीक़ी अता करने वाला है, उस की ख़ूबसूरती पर नज़र डाल सकें, उस को देख सकें। उनको मयस्सर ही नहीं आता। अतः उनकी नाक़िस मार्फ़त रियायत अस्बाब की कदूरत से मिली हुई होती है। जो भी मार्फ़त उनको है, अल्लाह तआला के बारे में जो थोड़ा बहुत इलम है जिसकी वजह से कभी नमाज़ पढ़ ली कभी नहीं पढ़ी, कभी हक़ अदा किया कभी नही किय इस में अस्बाब की कुदूरत मिली होती है। दुनियावी जो चीज़ें हैं, दुनियावी सबब हैं, दुनियावी ख़ाहिशात हैं वह शामिल हो जाती हैं इसलिए वह अल्लाह तआला के चेहरे को सही तरह दिखा नहीं सकती। और बाव्जाह उसके जो वह ख़ुदा के एहसानात को अच्छी तरह देख नहीं सकते ख़ुद भी इस की तरफ़ वह इलतेफ़ात नहीं करते जो एहसानात के मुशाहिदा के वक़्त करनी पड़ते है। इस तरफ़ पूरी तरह तवज्जा ही नहीं। जिससे मुहसिन की शक्ल नज़र के सामने आ जाती है बल्कि उनकी मार्फ़त एक धुँदली सी होती है। बल्कि बिल्कुल धुँदली छाई होती है। सही तरह साफ़ तौर पर अल्लाह का चेहरा उनको नज़र ही नहीं आता। वजह यह कि वे कुछ तो अपनी मेहनतों और अपने अस्बाब पर भरोसा रखते हैं और कुछ तकल्लुफ़ के तौर पर यह भी मानते हैं कि ख़ुदा तआला का हक़ ख़ालक़ीयत और रज़्ज़ाक़ीत हमारे सिर पर वाजिब है। साफ़ तौर पर उनको पता ही नहीं है। उनका कुछ भरोसा यही होता है कि हाँ हमने यह काम किया। हमारा यह इलम था उसकी वजह से हमारे ये काम हो गए इस पर भरोसा होता है और कुछ यह भी साथ साथ कि दीन के माहौल में रहने से कुछ न कुछ असर तो दीन में कोई है नाँ तो जो अल्लाह तआला का हक़ ख़ालक़ीयत है कि अल्लाह तआला ने पैदा किया, अल्लाह तआला ने हमें रिज़्क़ दिया, हमारे लिए परवरिश के सामान पैदा किए वह भी ज़हन में होता है। तो मिली जुली हालत होती है। इस मिली जुली हालत में वह हक़ीक़ी तौर पर ख़ुदा तआला का चेहरा नहीं देख सकते और चूँकि ख़ुदा तआला इन्सान को इस के ताकत समझ फ़हम से अधिक तकलीफ़ नहीं देता इस लिए उनसे जब तक कि वह इस हालत में हैं यही चाहता है कि इस के हुक़ूक़ का शुक्र अदा करें और आयत اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ में अदल से मुराद यही इताअत रियायत के साथ अदल है। अल्लाह तआला की रहमानियत फिर यहां काम आती है। जो ऐसे लोग हैं जो पूरी तरह अल्लाह तआला का चेहरा नहीं भी देख सकते उनसे भी अल्लाह तआला रहम का सुलूक करता है और उनकी इस हालत को भी क़बूल कर लेता है। फ़रमाया परंतु इस से बढ़कर एक और मर्तबा इन्सान। यह तो अदल है, एक बुनियादी चीज़ है यह। कम से कम मयार है एक मुस्लमान का लेकिन इस से बढ़कर इन्सान की मार्फ़त का है और वह यह है कि जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं इन्सान की नज़र अस्बाब को देखेने से बिल्कुल पाक और मुनज़्ज़ह हो कर ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और एहसान के हाथ को देख लेती है। सिर्फ उन दुनियावी अस्बाब पर भरोसा नहीं रहता बल्कि अल्लाह तआला के एहसान को नज़र फेर देख लेती है। जो इन्सान अगले क़दम पर जाता है। मु-कम्मल तौर पर अल्लाह तआला पर इन्हिसार होता है, उस का इर्फ़ान हासिल होता है। और इस मर्तबा पर इन्सान अस्बाब के हिजाबों से बिल्कुल बाहर आ जाता है। दुनियावी चीज़ों पर भरोसा नहीं करता बल्कि मुकम्मल भरोसा अल्लाह तआला पर होता है और यह मक़ूला कि उदाहरणतः मेरी अपनी ही आबपाशी से मेरी खेती हुई और या मेरे अपने ही बाज़ू से यह कामयाबी मुझे हुई या ज़ैद की मेहरबानी से फ़ुलां मतलब मेरा पूरा हुआ और बकर की ख़बर-गीरी से मैं तबाही से बच गया यह तमाम बातें छोटी सी और बातिल मालूम होने लगती हैं। न अपनी किसी ख़ूबी पर और कोशिश पर निर्भरता होती है न किसी दूसरे की मदद और उस की ख़ूबी पर निर्भरता होती है, सब चीज़ें मामूली हो जाती हैं और एक ही हस्ती और एक ही क़ुदरत और एक ही मोहसिन और एक ही हाथ नज़र आता है। तब इन्सान एक साफ़ नज़र से जिसके साथ एक ज़र्रा शिर्क फ़ीलअ-सबाब की गर्द-ओ-ग़ुबार नहीं ख़ुदा तआला के एहसानों को देखता है।

जब अल्लाह तआला इस तरह नज़र आने लग जाए फिर अल्लाह तआला के एहसानों को देखता है

और यह देखना इस प्रकार का साफ़ और यक़ीनी होती है कि वह ऐसे मुहसिन की इबादत करने के वक़्त उस को ग़ायब नहीं समझता बल्कि यक़ीनन उसको हाज़िर ख़्याल करके उस की इबादत करता है। फिर चाहे इन्सान इबादत कर रहा हो, इन्सान नमाज़ पढ़ रहा हो तो फिर अल्लाह तआला को अपने सामने समझता है और इस इबादत का नाम क़ुरआन शरीफ़ में अहसान है। सज्दा--रेज़ होना अल्लाह तआला के सामने गोया कि ख़ुदा सामने है। फ़रमाते हैं कि इस को क़ुरआन शरीफ़ अल्लाह तआला के मुआमले में एहसान कहता है और सही बुख़ारी और मुस्लिम मैं ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एहसान के यही अर्थ वर्णन फ़रमाए हैं।

फिर यहीं पर बात ख़त्म नहीं हो गई बल्कि आगे फ़रमाते हैं कि "और इस दर्जा के बाद एक और दर्जा है जिसका नाम اِيْتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى है और तफ़सील उसकी यह है कि जब इन्सान एक मुद्दत तक एहसानात-ए-इलाही को बुला शिरकत--ए-अस्बाब देखता रहे। एहसानात अल्लाह तआला के जो हैं वह बग़ैर किसी दुनियावी अस्बाब के देखता रहे, बग़ैर किसी शरीक के देखता रहे, सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला पर कामिल भरोसा हो "और इस को हाज़िर और बिला बास्ता मुहसिन समझ कर उसकी इबादत करता रहे तो इस तसव्वुर और तख़य्युल का आख़िरी नतीजा यह होगा कि एक ज़ाती मुहब्बत उसको जनाब--ए-इलाही की निसबत पैदा हो जाएगी। फिर अल्लाह तआला से इस की एक ज़ाती मुहब्बत पैदा हो जाएगी ग़रज़ कोई नहीं होगी। माँगना किसी चीज़ के लिए इस लिए नहीं होगा कि मुझे ज़रूरत है बल्कि एक ज़ाती मुहब्बत पैदा हो जाएगी क्योंकि मुतवातिर एहसानात का दायमी मुलाहिज़ा बिलाज़रूरत शख़्स ममनून के दिल में यह असर पैदा करता है कि वह रफ़्ता-रफ़्ता उस शख़्स की ज़ाती मुहब्बत से भर जाता है। जिस शख़्स ने एहसान किए होते हैं और मुतवातिर एहसानात का एहसास जो है और इस का मुलाहिज़ा, उसको देखते रहना कि अल्लाह तआला किस तरह एहसान कर रहा है इस की समझ और इस का इर्फ़ान हासिल हो जाना। फिर क्या होता है इससे, अल्लाह तआला की ज़ाती मुहब्बत पैदा हो जाती है क्योंकि यह उसूल है कि अगर इस तरह ताल्लुक़ हो तो एक ज़ाती मुहब्बत से दिल भर जाता है " जिसके ग़ैर महिदूद एहसानात इस पर मुहीत हो गए। अतः इस सूरत में वह सिर्फ़ एहसानात के तसव्वुर से इस की इबादत नहीं करता बल्कि उसकी ज़ाती मुहब्बत उसके दिल में बैठ जाती है। पहले मांगने के लिए इबादत, फिर अल्लाह तआला को सब कुछ समझ कर उसकी इबादत, एहसान का रंग हो गया, समझ लिया, फिर इससे भी आगे बढ़ गया कि कुछ मांगने के लिए नहीं इबादत होती बल्कि ज़ाती मुहब्बत जो अल्लाह तआला से है उसकी वजह से वह अल्लाह तआला को याद करता है, उस की वजह से वह अल्लाह तआला की इबादत करता है "जैसा कि बच्चे को एक ज़ाती मुहब्बत अपनी माँ से होती है। अतः इस मर्तबा पर वह इबादत के वक़्त सिर्फ़ ख़ुदा तआला को देखता ही नहीं बल्कि देख कर सच्चे उश्शाक की तरह लज़्ज़त भी उठाता है और तमाम अग़राज़ नफ़सानी मादूम हो कर ज़ाती मुहब्बत उसके अंदर पैदा हो जाती है और यह वह मर्तबा है जिसको ख़ुदा तआला ने शब्द اِيْتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى से ताबीर किया है और इसी की तरफ़ ख़ुदा तआला ने इस आयत में इशारा किया है فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا (अल् बकरः : 201) अतः अल्लाह तआला का ज़िक्र करो जिस तरह तुम अपने आबा का ज़िक्र करते हो बल्कि इस से भी बढ़कर ज़िक्र करो। अतः यह वह मुक़ाम है जो अल्लाह तआला से ख़ालिस मुहब्बत होने का मुक़ाम है।

शेष आगे ..

सदर अंजुमन अहमदिया,अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद कादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित
चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात
जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल कादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को कादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (9) सफ़र ख़र्च कादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

★ ★ ★

ग्रेड दर्जा चहारुम बराए माली/केयरटेकर/चौकीदार/बावर्ची/नानबाई/ख़ादिम मस्जिद के लिए शर्तें

विभाग सदर अंजुमन अहमदिया, अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद कादियान

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की तालीम की कोई शर्त नहीं है। (3) जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना ज़रूरी होगा। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगी उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) वही अभ्यर्थी ख़िदमत के लिए जाऐंगे जो मर्कज़ी कमेटी बराए भर्ती कारकुनान के इंटरव्यू में सफल होंगे। (6) इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल कादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को कादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (8) कादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान पिन कोड 143516

मोबाइल : 09682627592, 09682587713, दफ़्तर01872-501130

E-mail: diwan@qadian.in

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार “अख़बार बदर” 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 15 June 2023 Issue No. 24

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अह-मदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमात की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

पृष्ठ 1 का शेष

निहायत मुश्किल ज़रूर हो जाती है। इस हिक्मत के अधीन उस जगह फ़रमाया है कि तुम गुनाह के मुक़ाम से इतनी दूर खड़े रहो कि जहां से तुम बदी का मुक़ाबला कर सको। कुछ ने कहा है कि यह तो बुज़दिली है परंतु यह बुज़दिली नहीं यह तो एहति-यात है और एहतियात को कोई अक़लमंद बुज़दिली नहीं कहता।

ज़ाहिर है कि इन्सान दो ही किस्म के हो सकते हैं अव्वल वह जो गुनाह के पास जा कर भी बच सकता है। ऐसे शख़्स को गुनाह के मुक़ाम से दूर रहने की इस लिए ताकीद की कि गई तो बच सकता है परंतु मुम्किन है कि इस की तरफ़ देख कर दूसरे लोग भी इस मुक़ाम तक चले जाएं और अपनी कमज़ोरी की वजह से गुनाह में मुबतला हो जाएं। अतः ऐसे शख़्स को लोगों के लिए ठोकर का मूजिब न बनना चाहिए।

दूसरी किस्म के वे लोग हैं जो गुनाह के अवसर पैदा होने की सूरत में इस से बच ही नहीं सकते। उनको इस से क़रीब भी न जाने देने की हिक्मत तो ज़ाहिर ही है। अतः ख़ाह इन्सान गुनाह के क़रीब हो कर बच सकता हो, ख़ाह न बच सकता हो दोनों सूरतों में इस को गुनाह के क़रीब तक भी नहीं जाना चाहिए।

यह भी याद रखना चाहिए कि जिस मुक़ाम की तरफ़ जाने में कोई ख़ास फ़ायदा मद्द-ए-नज़र हो उसकी तरफ़ न जाना बुज़दिली कहला सकता है परंतु जिस जगह की तरफ़ जाना या न जाना कोई ख़ास फ़ायदा न रखता हो इस से अलग रहना कदापि बुज़दिली नहीं कहला सकता।

سَآءَ سَبِيْلًا इन अलफ़ाज़ से इस तरफ़ इशारा किया है कि इलावा अख़लाक़ी गुनाह होने के व्यभिचार में और भी बहुत से नुक़्सानात हैं। जो इन्सान शादी करता है वह ज़रूर एहतियात कर लेता है कि ऐसी लड़की से शादी करे जिसकी सेहत अच्छी हो। उसे कोई मुतअद्दी मर्ज़ न हो। आदात और अख़लाक अच्छे हों। इसी तरह लड़की के रिश्तेदार लड़के के विषय में सोच समझ लेते हैं। परंतु व्यभिचार में यह एहतियात नहीं हो सकती क्योंकि व्यभिचार होता ही शहवानी जज़बात के जोश में आ जाने की सूरत में है और उस वक़्त इन्सान किसी किस्म की एहतेयात नहीं कर सकता जिसका नतीजा कई किस्म की अमराज़ या माली तबाही की सूरत में निकलता है। अतः फ़रमाया शहवानी तक़ाज़ों के पूरा करने का यह रास्ता निहायत ख़तरनाक है।

यह बात रोज़ाना अनुभव में आ रही है कि जबकि बीवी से जो ताल्लुक़ पति पैदा करता है उसी किस्म का ताल्लुक़ विभचारी , व्यभिचारिणी से करता है लेकिन बावजूद उस के व्यभिचार के नतीजा में जिस किस्म की बीमारीयां पैदा होती हैं वह बीवी की सूरत में नहीं पैदा होतीं या बहुत कम पैदा होती हैं। दुनिया में जिस क़दर लोग आतिशक या सूज़ाक की मर्ज़ों में ग्रस्त होते हैं उनमें से किस क़दर बीवियों से इस मर्ज़ को क़बूल करते हैं? शायद सौ में से एक भी नहीं अन्य निनानवे फ़ीसदी या इस से ज़्यादा हिस्सा इन रोगों का व्यभिचार से रोग को हासिल करता है और जो मर्ज़ मियांया बीवी को एक दूसरे से लगते हैं वे भी दरहक़ीक़त किसी पहले व्यभिचार के नतीजा में होते है। अतः سَآءَ سَبِيْلًا कह कर एक ज़बरदस्त सच्चाई की तरफ़ इन्सान को तवज्जा दिलाई है जो है तो हर एक के सामने लेकिन उसकी तरफ़ तवज्जा बहुत कम लोगों को होती है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 328मुद्रित 2010 कादियान)

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad